



गन्ने के रस चूसक का प्रबंधन

अनिल कुमार*, विश्वजीत**, नवनीत कुमार*, ललिता राणा* और ए.के. सिंह*

वर्तमान परिदृश्य में जलवायु परिवर्तन एक बड़ा विषय है। यह विभिन्न प्रकार से मानव को प्रभावित कर रहा है और कृषि भी कोई अपवाद नहीं है। वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि और वर्षा में अनियमितता कृषि उत्पादन को मुख्य रूप से प्रभावित करते हैं। चिंता का विषय यह है कि इस बदलाव से कीट और भी आक्रामक हो गये हैं, जो गन्ने के मुख्य कीट थे अब उनका प्रभाव कम हो रहा है। जिनका प्रभाव कम था वे मुख्य कीट हो रहे हैं। खासकर, रसचूसक कीट का प्रभाव अत्यधिक बढ़ रहा है। इस लेख का उद्देश्य किसानों को गन्ने के रस चूसक कीट से अवगत करवाना और उनके प्रबंधन पर प्रकाश डालना है। इनमें ऐसे कीट भी हैं, जो कुछ दशक पूर्व मामूली कीट होते थे और अब वे विनाशकारी हो गए हैं। इतना ही नहीं कुछ मामलों में वे फसल को पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त कर देते हैं। नकदी फसल होने के कारण गन्ने का कृषि अर्थव्यवस्था में विशेष स्थान है।

गन्ना, किसानों की आय के साथ-साथ चीनी के कारखानों के लिए कच्चा माल भी है। एक अनुमान के मुताबिक गन्ने के रसचूसक कीटों के कारण 20 प्रतिशत की

*कीट विज्ञान विभाग, ईख अनुसंधान संस्थान, डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (समस्तीपुर)-848125; **शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग, डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (समस्तीपुर)

गिरावट और चीनी उद्योग को 15 प्रतिशत का नुकसान होता है। रस चूसक कीट का संक्रमण इतना तेज होता है कि नियंत्रण न करने पर गन्ने में चीनी की मात्रा कम हो जाती है। इसके साथ में इसके उत्पादन में भारी क्षति हो जाती है। किसान इसी घबराहट में अवांछित कदम, जैसे कि कीटनाशक का अत्यधिक प्रयोग शामिल करने लगते हैं। किसानों को चाहिए कि फसल में लगाने वाले कीटों एवं

उनके उचित प्रबंधन का पहले से ही ज्ञान प्राप्त कर लें।

पायरिला

- प्रौढ़ कीट 20 मि.मी. लंबा गन्ने की सूखी पत्तियों जैसा भूरे रंग का होता है, जिसका अग्र भाग नुकीला होता है।
- शिशु कीट 5-15 मि.मी. लंबा एवं

काला चिकटा

- प्रौढ़ कीट 6-7 मि.मी. लंबे तथा पंख काले होते हैं।
- पंखों पर सफेद धब्बा होता है।
- शिशु कीट का रंग प्रौढ़ के समान परन्तु आकार में छोटा होता है; अधिक संख्या होने पर खेत से बदबू निकलती है।
- आक्रमण गर्मी में मई से जून तक होता है।
- खूंटी फसल पर अत्यधिक प्रकोप होता है।
- प्रौढ़ एवं शिशु दोनों पौधों के कंठ से रस चूसते हैं।
- पौधे के बीच की पत्तियां पीली हो जाती हैं।
- कुछ समय बाद पत्तियां सूख जाती हैं।
- संक्रमित पौधों की बढ़वार रुक जाती है।



निदान

- थायोमिथाॅक्सॉम 25 डब्ल्यू. जी. नामक कीटनाशी की 1 ग्राम मात्रा का 2.5 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- कीटनाशी के छिड़काव के समय ध्यान दें कि छिड़काव मध्य फुनगी एवं पर्णच्छद पर केंद्रित रहे, जहां ये छिपे रहते हैं।
- यदि तेज वर्षा आने की आशंका हो, तो कीटनाशी का प्रयोग न करें। मध्य फुनगी में पानी भरने से ये स्वतः नष्ट हो जायेंगे।

सफेद मटमैले रंग का होता है और अन्तिम उदरस्थ भाग में उजली पूँछ होती है।

- इसका आगमन मई-जून मानसून के पूर्व एवं सितम्बर-अक्टूबर मानसून के बाद होता है।
- शिशु एवं प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों का रस चूसते हैं।
- पत्तियां पीली एवं झुलसी हुई नजर आती हैं।
- शिशु कीट पत्तियों पर मीठा तरल पदार्थ छोड़ता है, जिससे काली फफूंद का आक्रमण हो जाता है। पौधे की प्रकाश संश्लेषण क्रिया बन्द हो जाती है। इससे चीनी की मात्रा में 2 से 34 प्रतिशत तक की कमी आती है और गुड़ की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है।

निदान

- इस कीट का प्रकोप अधिक नाइट्रोजनयुक्त फसल में होता है।
- पायरिला के अंडों का संग्रह करके नाश किया जाना चाहिए। इसके साथ ही सूखी पत्तियों को समय-समय पर निकालते रहना चाहिए।
- एपीरिकेनिया परजीवी, पायरिला को सफलतापूर्वक नियंत्रण करता है। कीटनाशक एपीरिकेनिया का नाश कर सकते हैं, ऐसा करना पैसे की बर्बादी होगी। जहां एपीरिकेनिया मौजूद नहीं है, वहां इसके 4000-5000 हजार कोकून को समानांतर रूप से छोड़ना चाहिए और यदि जिस भाग में कम संख्या में परजीवी हैं, वहां खेत के दूसरे भागों से जहां परजीवी ज्यादा है, पुनर्विभाजन किया जाना चाहिए।
- पायरिला के प्रौढ़ को मेटारिजियम से उपचारित करके 250 प्रति हैक्टर छोड़ा जा सकता है।
- मानसून के समय पायरिला की तीनों अवस्थाओं के परजीवी प्रकृति में पाये जाते हैं। परजीवी न होने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 500 एमएल/हैक्टर छिड़काव करें।

दहिया कीट

- मादा पंखरहित 5 मि.मी. लंबी तथा 2.5 मि.मी. चौड़ा गुलाबी रंग की होती है।
- नर के एक जोड़ी पंख होते हैं।
- शरीर गोल, खंडों में विभाजित एवं सफेद चूर्ण से ढका होता है।

सफेद मक्खी

- कीट के प्रौढ़ 3 मि.मी. लंबे तथा उजले पंख वाले होते हैं। शिशु अंडाकार, पंखरहित काले रंग का होता है।
- कीट का प्रकोप अगस्त से अक्टूबर तक पाया जाता है।
- खूंटी फसल पर अधिक प्रकोप होता है।
- कीट के केवल शिशु पत्तियों के निचले भाग से रस चूसते हैं। पत्तियों पर काला चिपचिपा पदार्थ जम जाता है।
- संक्रमित फसल दूर से ही पीली दिखाई पड़ती है।



निदान

- कीट के नियंत्रण के लिए पौधों की सूखी पत्तियों को समय-समय पर (5वें तथा 7वें महीने) निकालकर जला दें।
- खेत में पानी के अधिक जमाव को रोका जाना चाहिए, परन्तु यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि मिट्टी में पर्याप्त नमी बनी रहे।
- अत्यधिक खाद के प्रयोग को वर्जित किया जाना चाहिए।
- कीटनाशक के तौर पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 500 मि.ली. दवा को 1000 लीटर पानी में साथ ही 20 कि.ग्रा. यूरिया के साथ मिलाकर अधिक आक्रमण होने पर छिड़काव करें। यूरिया का उपयोग गन्ने में पुनः वृद्धि लाने के लिए किया जाता है।

- कीट समूहों में गन्ने की गांठों पर होते हैं।
- 4-5 महीने की फसल पर कीट दिखाई देते हैं और फसल कटने तक देखे जा सकते हैं।
- शिशु कीट एवं पंखरहित मादा गन्ने एवं पत्तियों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं।
- सूखे की स्थिति में फसल पर अधिक प्रकोप होता है। कीट द्वारा मधुम्राव से कज्जली फफूंद विकसित होती है।

निदान

- पिछली फसल के अवशेषों को नष्ट कर दें।
- संक्रमित बीज का उपयोग रोपण में न करें।
- रोपण के समय अनुशंसित पंक्तियों के बीच की दूरी को अपनाएं।
- संक्रमित लीफशीथ को जहां तक हो सके निकालकर जला दें। थायोमीथॉक्सॉम 25 डब्ल्यू.जी. नामक कीटनाशी का 1 ग्राम मात्रा 2.5 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

शल्क कीट

- यह कीट 2 मि.मी. लंबा तथा 1 मि.मी. चौड़ा होता है।
- शिशु पीले तथा सुनहरे रंग के होते

हैं। इनकी उपस्थिति ज्यादातर स्तम्भ पर होती है।

- आक्रमण जून से दिसंबर तक होता है।
- खूंटी फसल पर अधिक प्रकोप होता है।
- शिशु स्तम्भ से रस चूसते हैं। पौधा पूरा सूख जाता है। प्रकोप से गन्ने में चीनी की मात्रा में कमी हो जाती है।

निदान

- संक्रमित फसल के बीज नहीं लें तथा रोपने से पहले गुल्लियों को एसिटामीप्रिड 20 एस.पी./1 ग्राम 3 लीटर पानी के घोल में 10-15 मिनट डुबो लें।
- इस कीट की रोकथाम के लिए एसिटामीप्रिड 20 एस.पी./1 ग्राम 3 लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव खड़ी फसल पर इस कीट के आगमन के समय करना चाहिए।
- फसल की कटाई मिट्टी के 1-2 इंच के नीचे से करें और काटने के बाद फसल के अवशेषों को खेत में ही जला दें।
- संक्रमित पौधों की खूंटी नहीं लेनी चाहिए।